Self Respect

24th May,2014

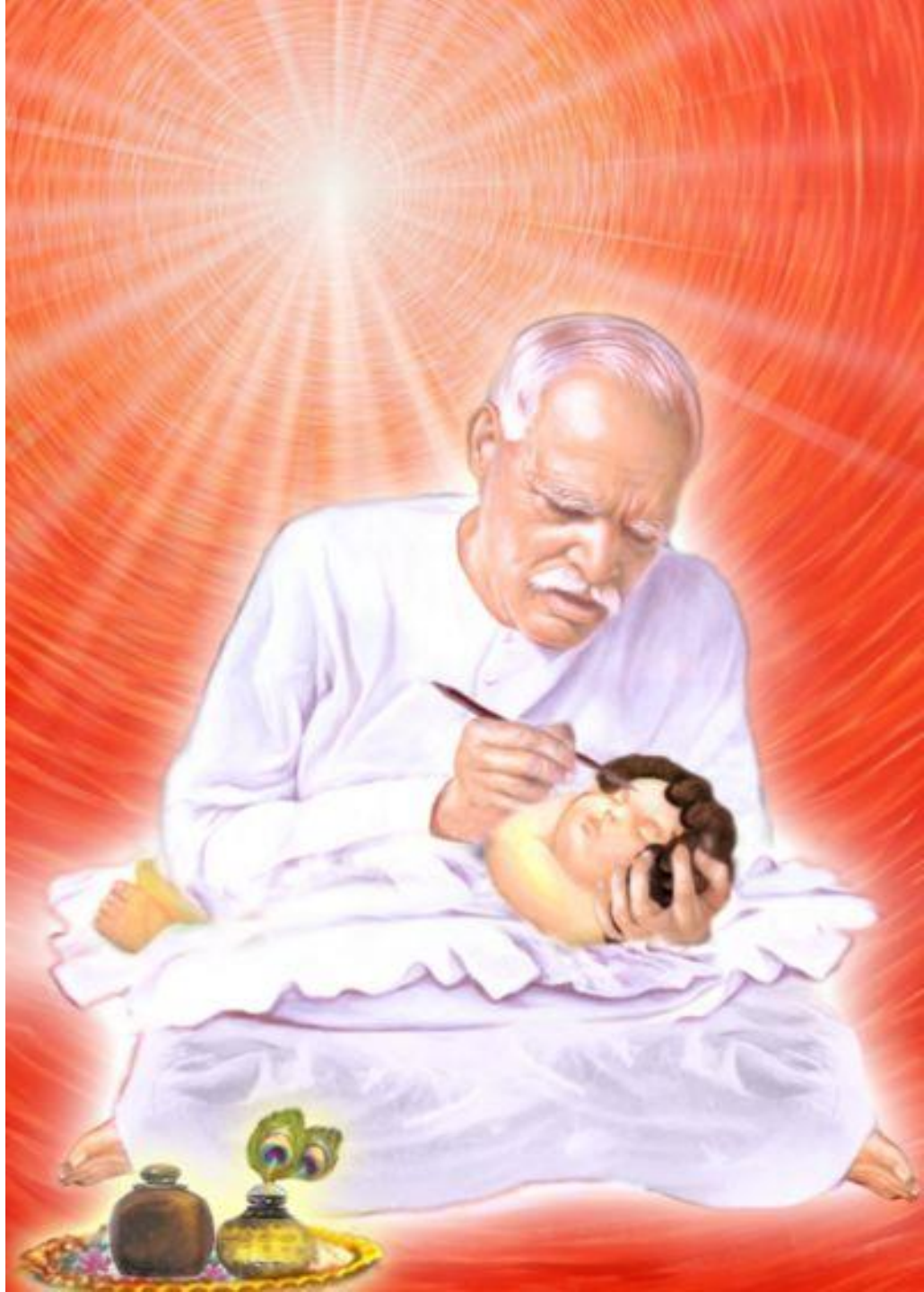

पहले माला फेरते थे | अभी तुम माला के दाने बनते हो |

अल्फ़ को जान गये हो तो बे बादशाही ज़रूर मिलनी चाहिए |

तदबीर कराने वाला टीचर है|

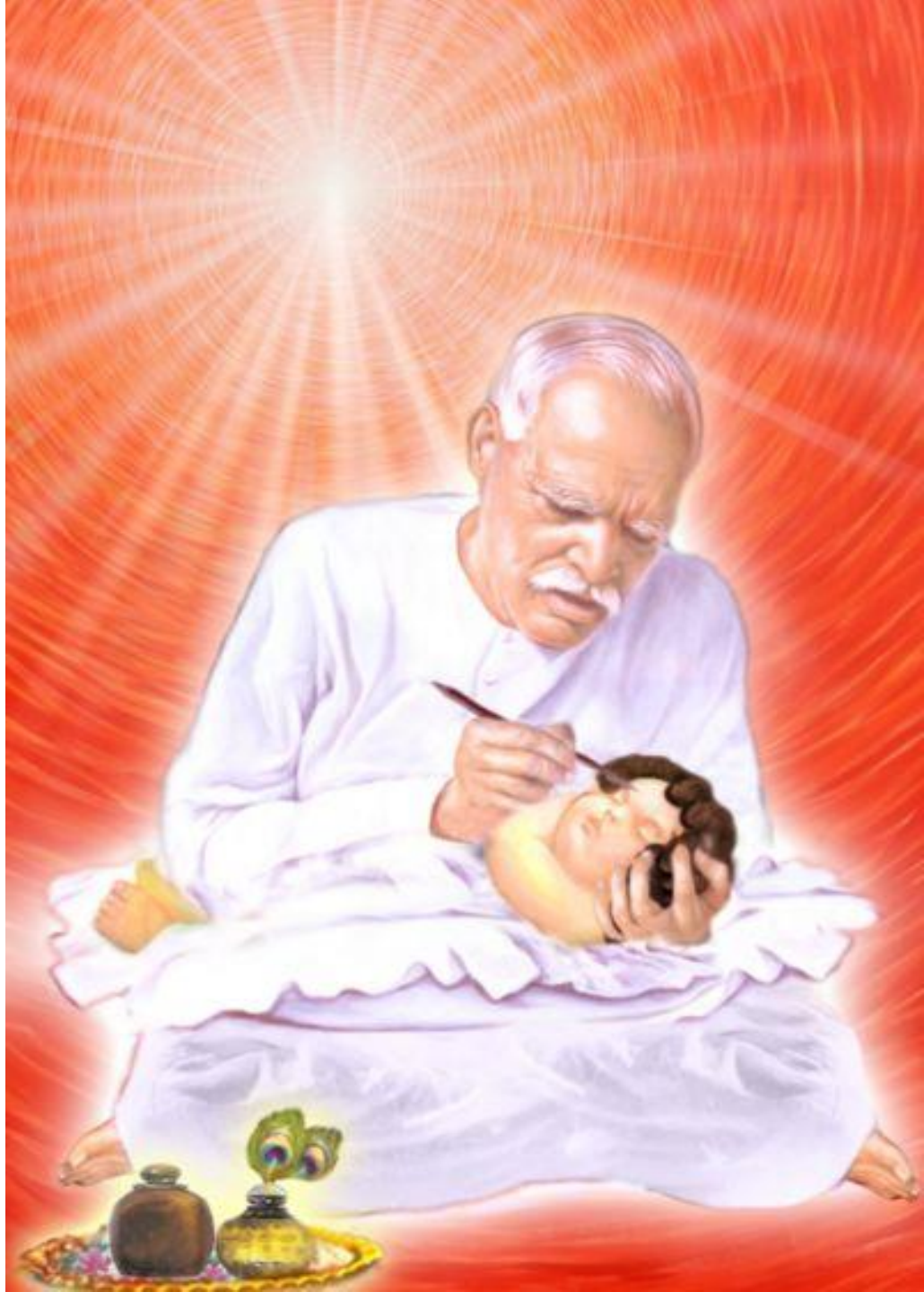

आत्मायें सभी भाई-भाई हैं | फिर बहन-भाई होते हैं | बेहद के सिज़रे का हेड प्रजापिता ब्रह्मा हो गया | जैसे बिरादरी का सिजरा होता है ना |

इसको कहा जाता है वैराइटी धर्मों का झाड़ | वैराइटी फ़ीचर्स हैं, एक न मिले दूसरे से | हर एक की एक्टिविटी का पार्ट एक न मिले दूसरे से | यह बहुत गुह्य बातें हैं | छोटी बुद्धि वाले तो समझ न सके | बहुत मुश्किल है |

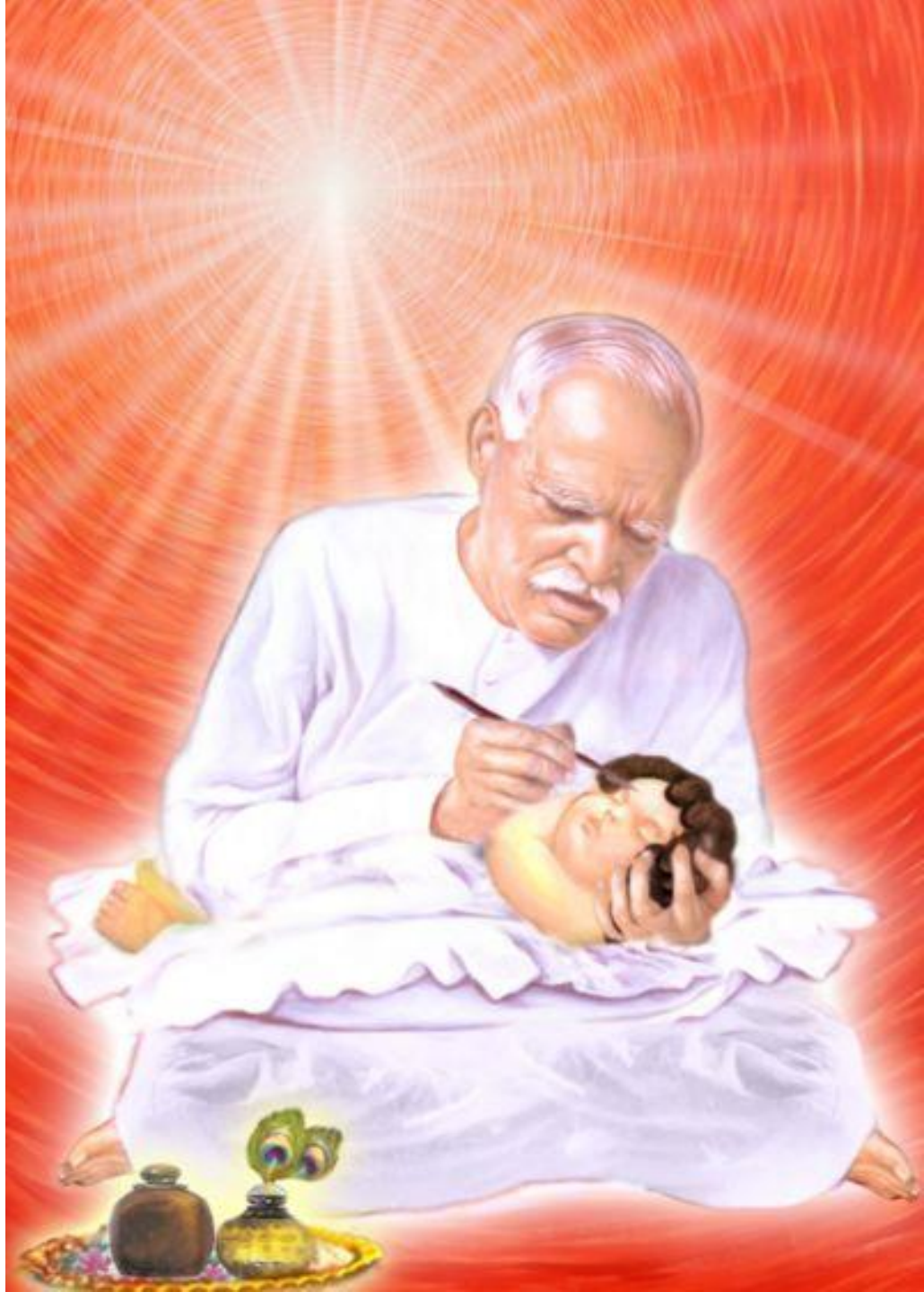

बाबा खुद समझाते हैं यह भाग्यशाली रथ है | इस मकान अथवा रथ में आत्मा बैठी है | हम ऐसे बाप को किराये पर अपना मकान वा रथ देवें तो क्या समझते हो! इसलिए इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है, जिसमें बाप बैठ तुम बच्चों को हीरे जैसा देवता बनाते हैं |

बाप तुमको बहुत बड़ी लॉटरी देते हैं | यह है सबसे ऊँची लॉटरी, इसमें टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए |

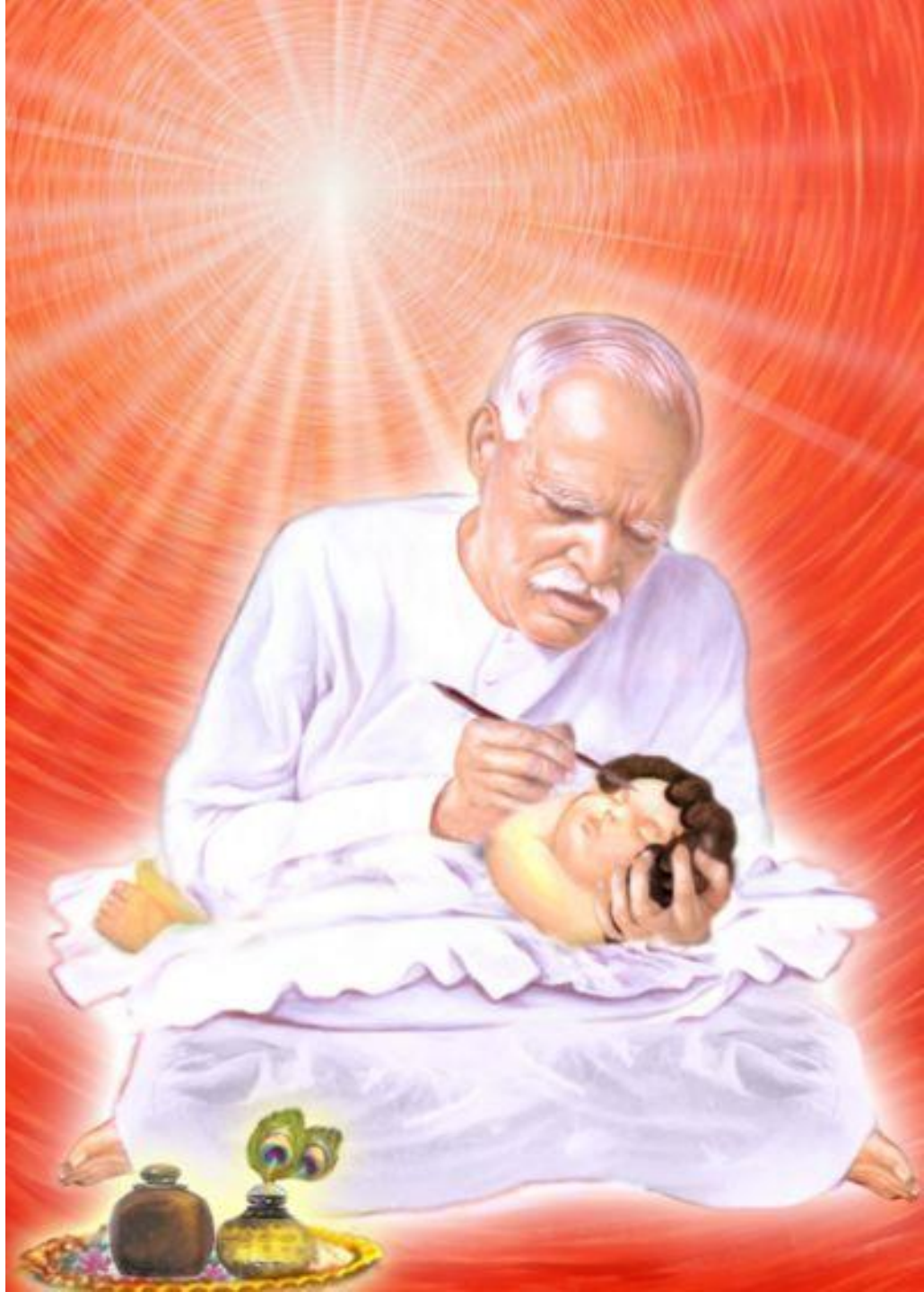

तुम्हारा बाप के साथ डायरेक्ट योग है |

बाप कहते हैं मैं तुमको जो समझाता हूँ वह धारण करना है | यह ज्ञान भी तुमको अभी मिलता है | फिर प्रायः लोप हो जाता है |

यह नॉलेज है सोर्स ऑफ़ इनकम, इससे तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो | स्वर्ग के मालिक बनते हो |

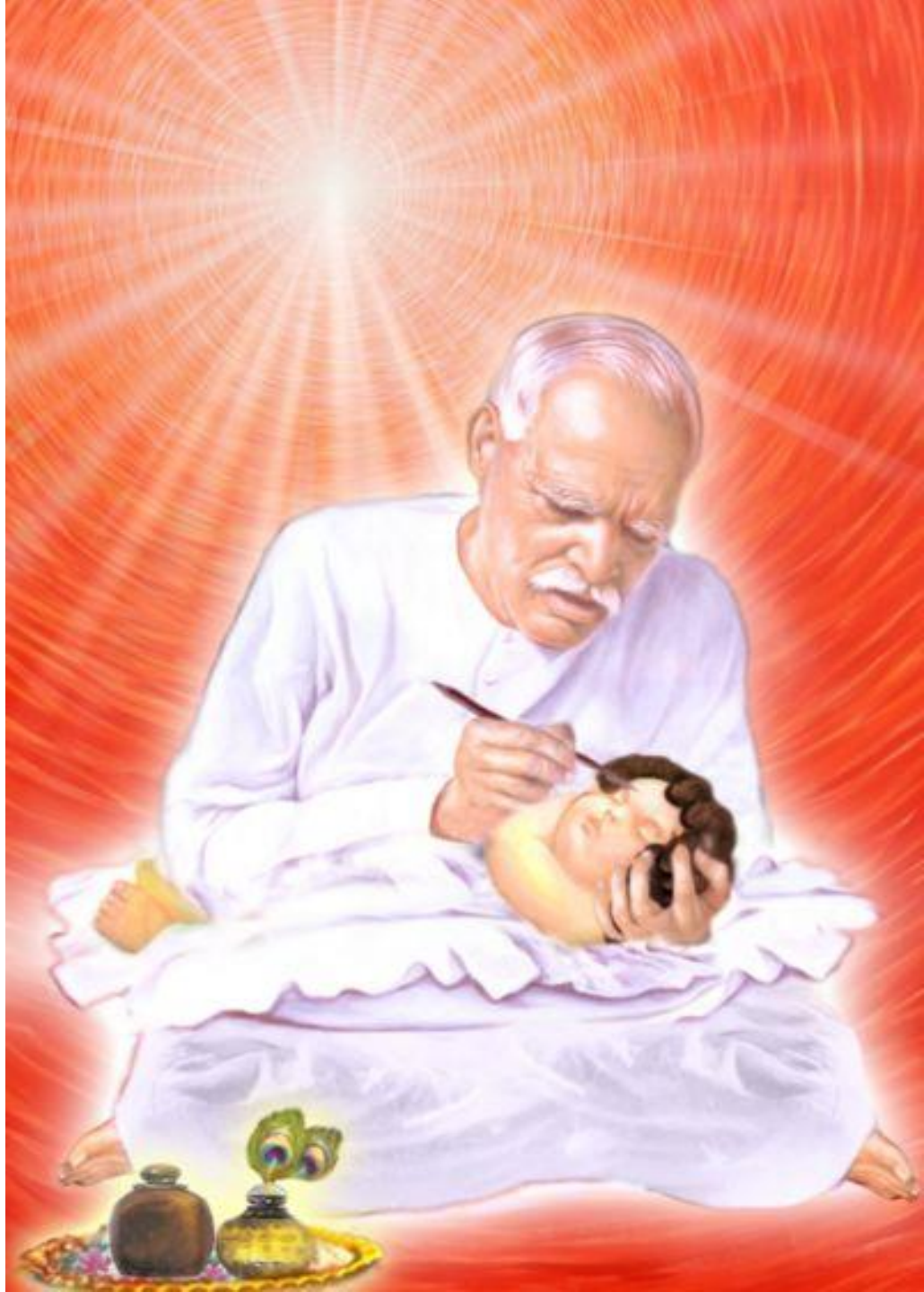

बाप याद दिलाते हैं तुमको स्वर्ग में कितने अपार सुख दिये हैं | तुम विश्व के मालिक थे फिर सब गंवा दिया |

स्वर्ग में तुम एवरहेल्दी-वेल्दी रहते हो | यहाँ मनुष्य को हेल्दी बनाने के लिए कितना खर्चा करते हैं वह भी एक जन्म के लिए | तुमको आधाकल्प एवरहेल्दी बनाने में क्या खर्चा होता है! एक नया पैसा भी नहीं | देवतायें एवरहेल्दी हैं ना | तुम यहाँ आये ही हो एवरहेल्दी बनने के लिए |

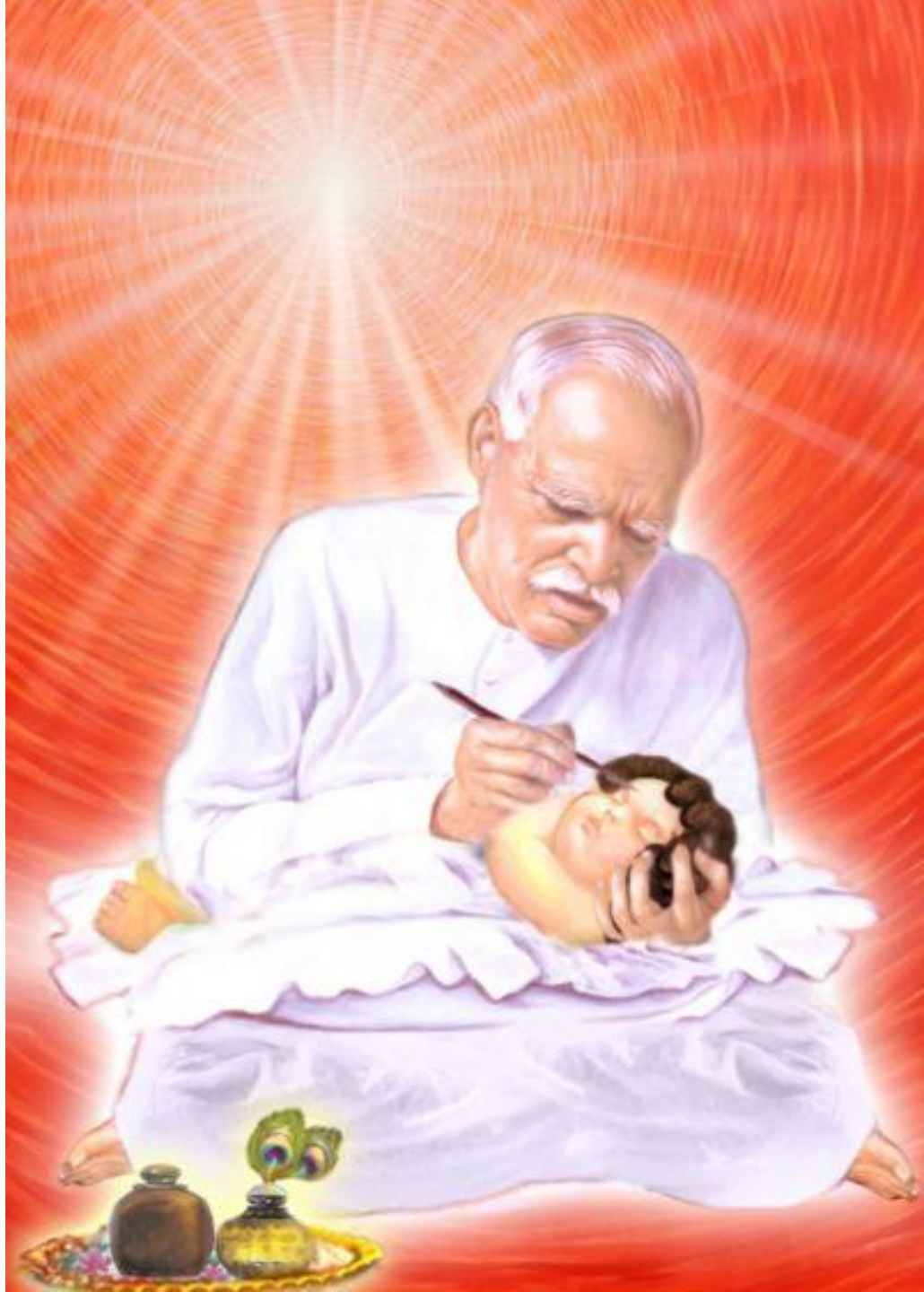

तुम अभी सर्वगुण सम्पन्न बन रहे हो | अभी तुम संगम पर हो | बाप तुमको नई दुनिया का मालिक बना रहे हैं | ड्रामा प्लैन अनुसार जब तक ब्राह्मण न बनें तब तक देवता बन न सकें | जब तक पुरुषोत्तम संगमयुग पर बाप से पुरुषोत्तम बनने न आयें तो देवता बन न सकें |

ब्राह्मण जीवन में एक बाप को अपना संसार बनाने वाले स्वतः और सहजयोगी भव

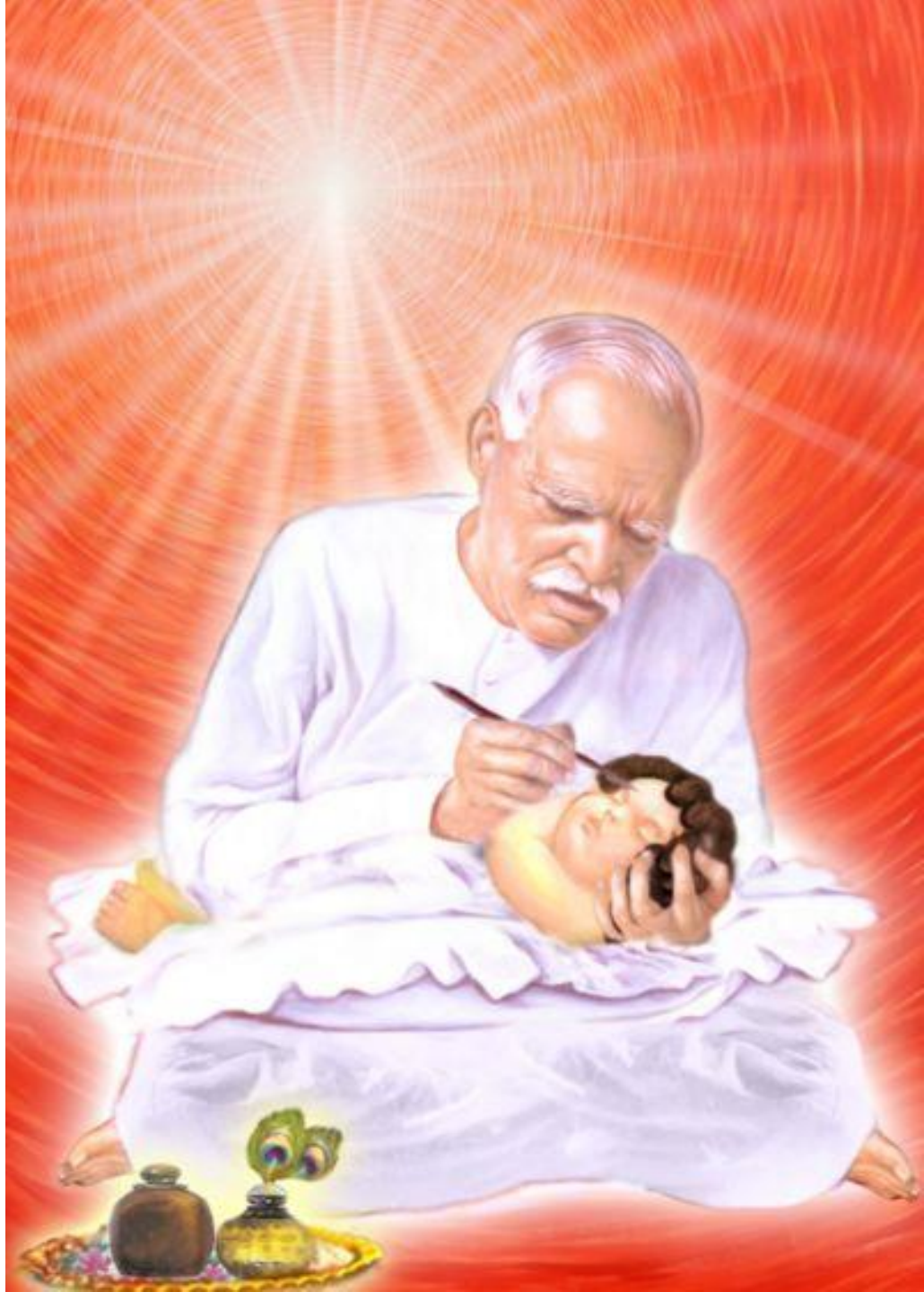

अभी दुनियावी मनुष्यों को यह विचार तो आना चाहिए की इन कन्याओं, माताओं ने सन्यास क्यों लिया है? यह कोई हठयोग, कर्म-सन्यास नहीं है परन्तु बिल्कुल सहजयोग, राजयोग, कर्मयोग सन्यास जरुर है | परमात्मा ख़ुद आए जीते जी, देह सहित देह के सभी कर्मेन्द्रियों का मन से सन्यास कराता है अर्थात् पाँच विकारों का सम्पूर्ण सन्यास करना ज़रूर है |

यह है ईश्वरीय अतीन्द्रिय अलौकिक सुख जिसके आगे वो दुनियावी पदार्थ तुच्छ हैं, उन्हों को यह पता है कि इस मरजीवा बनने से हम जन्म-जन्मान्तर के लिये अमरपुरी की बादशाही प्राप्त कर रहे हैं, तब ही भविष्य बनाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं |

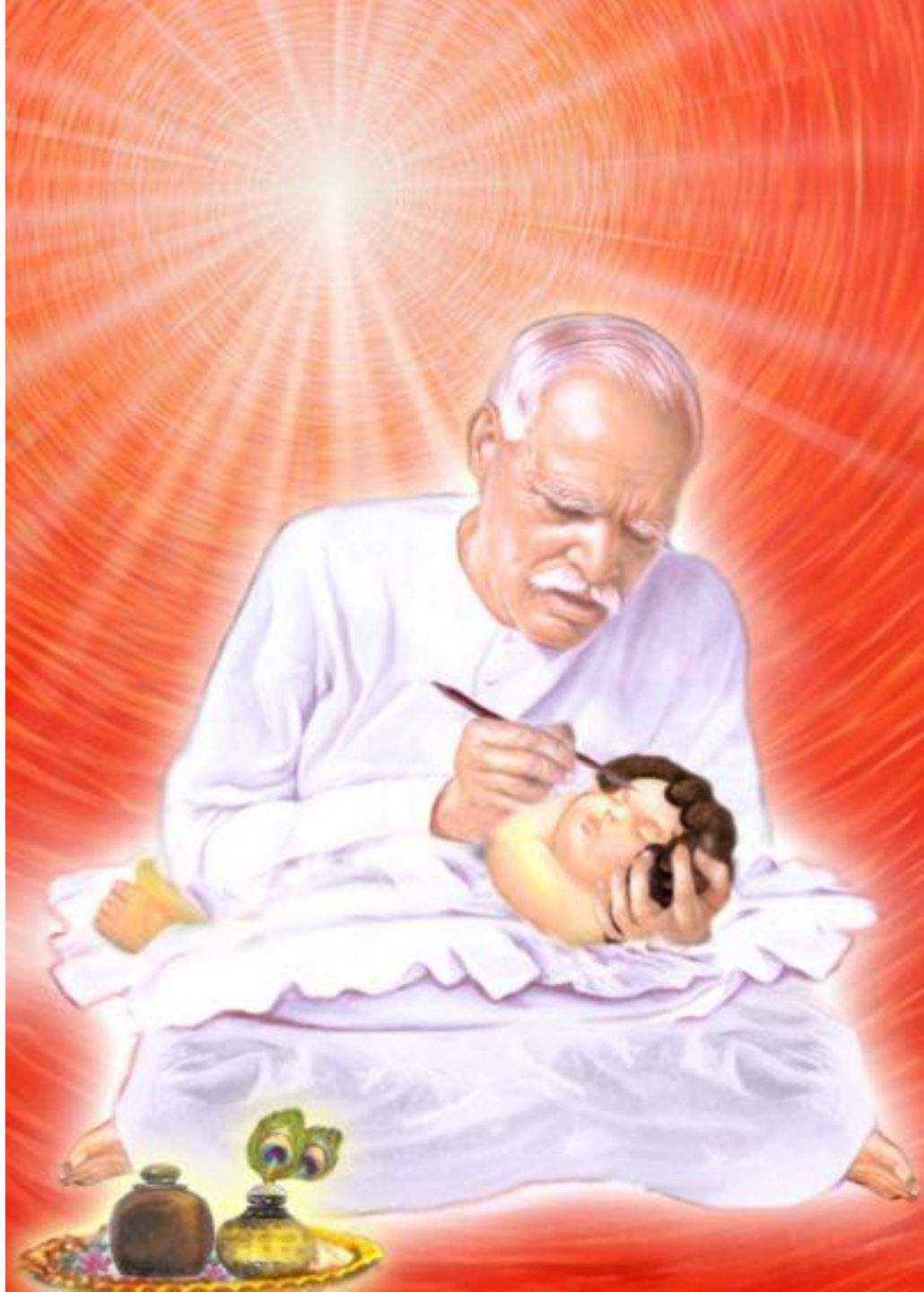

परमात्मा का बनना माना परमात्मा का हो जाना, सबकुछ उसको अर्पण कर देना फिर वो रिटर्न में अविनाशी पद दे देता है |

हमको कोई सन्यासियों के मुआफ़िक, मण्डलेश्वर के मुआफ़िक यहाँ महल बनाए नहीं बैठना है परन्तु ईश्वर अर्थ बीज बोने से वहाँ भविष्य जन्म-जन्मान्तर इनका बन जाना है, यह है गुप्त राज़ |

अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |